दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को रतलाम, मध्य प्रदेश की जनसभा में प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

———————————————————

दोस्तों और बहनों!

(शोर)

मुझको आपकी सभा में आने में लगभग एक घंटे की देर हो गयी। इसके कुछ कारण ऐसे थे कि जो मेरी शक्ति के बाहर थे, लेकिन फिर भी आपका समय नष्ट हुआ है, मैं इसके लिए आपसे माफी चाहता हूं।

अब लोकसभा का चुनाव होने वाला है और जनवरी में आपके वोट पड़ेंगे। मैं आपको बस इतना कहने के लिए हाजिर हुआ हूं कि जो तीन पार्टियां चुनाव में खड़ी हुई हैं या छोटी–मोटी और बहुत–सी हैं। एक, जनता पार्टी, जिसके लीडर श्री जगजीवनरामजी हैं और दूसरी इंदिराजी, इंदिराजी की कांग्रेस कहलाती है और तीसरा लोकदल। तो लोकदल की तरफ से मैं हाजिर हुआ हूं आपको यह मशविरा देने के लिए कि आप लोकदल को राय दो। तो आप पूछेंगे क्यों? मैं अभी आपको बतलाने वाला हूं। जवाब मेरा यह है कि देश के सामने जो समस्याएं हैं, इनका समाधान केवल लोकदल के पास है और किसी के पास नहीं। (शोर)

और, अब मैं कुछ दोस्तों से यह कहना चाहता हूं कि अगर वो सभा को बिगाड़ने के लिए आये हैं, तो बेशक वे आवाज लगायें। लेकिन अगर वो शरीफ और सभ्य आदमियों की तरह सुनने के लिए आये हैं, तो मेरी बातें उनको पसंद हों या न हों, उनको खामोशी से सुनना चाहिए।

तो, मैं यह कह रहा था, आज देश की चार बड़ी समस्याएं हैं। एक–देश की गरीबी, और गरीबी नहीं बल्कि बढ़ती हुई गरीबी, दिन–ब–दिन देश की ––। दूसरी, ये कि बेरोजगारी, वो भी मुझको कहने में अफसोस होता है कि समय बीतते–बीतते बेरोजगारी भी बढ़ती जा रही है। तीसरा यह कि गरीब और अमीर, गांव और शहर के लोगों की आमदनी में असमानता और गैर–बराबरी, खाई है। तो वो खाई भी बजाय कम होने के चौड़ी होती जा रही है, जब से कि स्वराज आया। और, चौथी बात, राजनीतिक जीवन में और प्रशासन के प्रशासकीय जीवन में हमारे यहां भ्रष्टाचार। वो भ्रष्टाचार भी दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। आज ईमानदार आदमी ढूंढ़े से, बड़ी मुश्किल से दिखाई देता है।

जब अंग्रेजों के जमाने में मेरी पीढ़ी के लोग अंग्रेजों से संघर्ष कर रहे थे, गांधीजी के नेतृत्व में, तो हम तरह–तरह के स्वप्न अपने देश के लिए देखा करते थे। हमने यह पढ़ा था और अपने लीडरों के जरिये ये सुना था, उस जमाने में भी कि किसी जमाने में हमारा देश बहुत गौरवशाली था, बहुत समर्थशाली था। यहां से विद्या का प्रकाश संसार भर में फैला था। हमारे पुरखों से विदेशी लोग विद्या सीखने के लिए आया करते थे। तो गांव में भी सपना यह था कि देश को आजाद करने की ––– (शोर)

मैं आपसे यह कहूंगा कि अगर आप शरीफ आदमी हैं, तो खामोश रहें। कायदा यह है, कानून यह है कि अगर आप लोगों ने शोर मचाया, मीटिंग नहीं होने दी, तो आप पुलिस वालों पर इल्जाम लगायेंगे कि आपको इन्होंने निकाला। ये कानून है बाकायदा। और, अगर आपकी कोई सभा हुई तो आप ––– (पहले से भी अधिक शोरगुल) क्या मतलब है ? मैं जानना

चाहता हूं आपसे ? क्या मतलब है आपका ? और अगर आप आये हैं तो चुपचाप सुनिये और अगर झगड़ा करने के लिए आये हैं, तो मुझे यह बतलाइये कि आप क्या करना चाहते हैं, किस बात का आपने सोच रखा है ? (शोर–शराबा) फिर वही बात, अब यही बात तो मैं कहता हूं कि हमारा जनसंघ का झगड़ा किन बातों पर हुआ ? इसी बात पर हुआ (और भी अधिक शोर) इसी बात पर हुआ। मैंने जनसंघ के और आर0एस0एस0 के खिलाफ कभी कोई लफ्ज नहीं कहा था। वरना उत्तर प्रदेश के अंदर कितने चुनाव हुए थे, मैं राष्ट्रीय स्वयं संघ के लोगों की तारीफ किया करता था। उल्टे तारीफ करता था, कभी एक शब्द मैंने खिलाफ नहीं कहा, बल्कि इलेक्शन खिलाफ लड़ता था। लेकिन जो धीरे–धीरे अब आप लोग जो करते हैं, वो मैं आपको बताता हूं कि इससे मुल्क चल नहीं सकता, जनतंत्र नहीं चल सकता। इंदिरा तो एक व्यक्ति है, जो डिक्टेटरशिप कायम करना चाहती है। आप एक संगठन हैं, जो डिक्टेटरशिप इस मुल्क के अंदर कायम करना चाहते हैं। (तालियां)। इससे साबित होता है कि आपने यह तय करना है कि हम इस सब चीज को नहीं चलने देंगे सभा में। ठीक है, यह हो सकता है आपको कामयाबी हो। लेकिन मैं आपको बतलाता हूं कि अगर आपकी कोई सभा हुई तो उसको दूसरे लोग नहीं चलने देंगे। क्या मायने हुए इस बात के ? (तालियां)।

तो, मैं आपसे यह अर्ज कर रहा था कि मेरी पीढ़ी के लोग सन् 18 या 20 और 25 की बात कहता हूं, जबकि हम स्कूल और कालेज में पढ़ते थे, तरह–तरह के स्वप्न अपने देश के लिए देखा करते थे। हम ये चाहते थे कि जल्दी ही आजाद हों और फिर इसको हम हिमालय की चोटी पर बैठा देंगे एक प्रकार से। लेकिन दोस्तों, वो हमारे अरमान सब खतम हो गये। आज देश जैसा मैंने कहा कि लगभग सभी देशों से ज्यादा गरीब है। 125 देश हैं, इस दुनिया के अंदर, जिनकी आबादी 10 लाख से ज्यादा है, उनको देश मानेंगे इंडिपेंडेंट। अगरचे, हमारे तो एक–एक जिले की आबादी दस लाख से ज्यादा है। उन 140 देशों में हमारा नम्बर 111 है, अर्थात 110 देश हमसे मालदार हैं और 14 देश हमसे गरीब हैं। ये है गरीबी।

यही नहीं, मैंने आपसे तभी कहा कि हिन्दुस्ताान में गरीबी बढ़ती जा रही। सन् 64–65 में जब इंदिराजी ने चार्ज लिया था, 66 में, तो उससे एक साल पहले हमारे देश का नम्बर 85 था। 84 देश मालदार, और 40 देश गरीब। आठ साल बाद हमारा नम्बर 104 था, 21 देश हमसे गरीब और 103 देश हमसे मालदार। और, ठीक तीन साल बाद, 76 में, मैं आंकड़े 76 के आपको बतला रहा था– चार पोजीशन हम और नीचे खिसक गये और आज देश का नम्बर है गरीबी–अमीरी के लिहाज से 111वां। देश के अन्दर 48 फीसदी आदमी ऐसे हैं, जिनको भरपेट भोजन नहीं मिलता या यथेष्ट भोजन नहीं मिलता या ऐसा भोजन नहीं मिल सकता, जिसको खाकर उसकी तंदुस्स्ती कायम रहे।

दूध, जो कि अंग्रेजों के जमाने में भी कम था, उससे पहले हमारे लोगों को ज्यादा दूध पीने को मिलता था। लेकिन आज अंग्रेजों के जमाने के मुकाबले में फीसद दूध भी कम हो गया है और गरीब आदमियों के लिए, क्या आधे आदमियों के लिए दूध, हमारे लिए दवा बनकर, औषधि बनकर रह गया है। यह हमारी गरीबी का हाल है।

शहरों में भी गरीबी है। वैसे गांव में, क्योंकि आबादी ज्यादा है। 80 फीसदी आदमी हमारे गांव में रहता है, तो वहां तो गरीब हैं ही सबसे ज्यादा। लेकिन जो 20 फीसदी हमारे शहर में रहते हैं, तो हमारे प्लानिंग कमीशन ने जो अनुमान निकाला, वो यह कि 41 फीसदी शहर में भी वैसे ही लोग हैं, जैसे गांव के अंदर हैं। ये बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं, गगनचुम्बी जो

इमारतें बनी हुई हैं, इनमें महल बने हुए बड़े–बड़े, इनके पीछे वो गरीब आदमी रहते हैं, जो कि सड़क पर चलने वाले को दिखायी नहीं देते। तो गरीबी का यह हाल है।

दूसरे, मैंने आपसे यह कहा था– बेरोजगारी। बेरोजगारी गांव में भी बढ़ती जा रही है, शहर में भी बढ़ती जा रही है। हमारे शहर के पढ़े–लिखे लड़के, बी0ए0पास, एम0ए0 पास, हाई स्कूल पास, साइंसदॉ, इंजीनियरिंग या डॉक्टरी, इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग और दूसरी इंजीनियरिंग मैकेनिकल वगैरा, उसकी डिग्री हासिल किये हुए दर–दर मारे फिरते हैं। जब जनता पार्टी ने चार्ज सम्भाला था, तब एक करोड़ 2 लाख आदमी थे, जिनका नाम एम्प्लायमेंट एक्सचेंज में दर्ज था, कामदिलाऊ दफ्तरों में, कि वो रोजगार चाहते हैं और जिस वक्त चार्ज छोड़ा है, जनता पार्टी ने, तो एक करोड़ 37 लाख आदमियों का नाम दर्ज था, अर्थात् बजाय हमारी बेरोजगारी खतम होने के 35 लाख आदमी सवा दो साल के अंदर हमारे लड़के बेरोजगार हो गये।

लाखों–हजारों लड़के हमारे यहां से दूसरे देशों में पढ़ने जाते हैं, वापिस नहीं आते हैं। मुझको कुछ मालूम है, जो वापिस आते हैं, साल – दो साल यहां परेशान होकर फिर वापिस चले जाते हैं। ये तो वो हैं जो पढ़ने जाते हैं, फिर वापिस नहीं आते। हजारों तो वो हैं जो पास अपने यहां करते हैं, विद्या यहां हासिल करते हैं, पूरी डिग्री हासिल कर लेते हैं पर रोजगार न मिलने के कारण इंग्लैंड, अमरीका और जर्मनी चले जाते हैं। एक अर्थशास्त्री ने हिसाब लगाया कि औसत 65 किसान एक साल जितना पैदा करता है, इतना खर्च होता है एक लड़के को ग्रेजुएट बनाने में और वो लड़का ग्रेजुएट और पोस्ट–ग्रेजुएट बनने के बाद उन मालदार मुल्कों को चला जाता है जो हमसे कई गुना मालदार हैं। और बजाय इस गरीब मुल्क के विकास में हाथ बंटाने के, दूसरे मुल्कों की जा के मदद करता है।

तो ये बेरोजगारी का हाल है, शहर का और पढ़े–लिखे लोगों का। हमारे गांव का भी यही हाल है। 1970–71 में एक एग्रीकल्चर सेन्सस किया गवर्नमेंट आफ इंडिया ने, अर्थात् कितनी–कितनी जमीन किन लोगों के पास है, कितनी–कितनी जमीन है, कितने लोगों के पास और कितनी ज्वार बोई जाती है, कितने में गन्ना बोया जाता है, कितने में गेहूं बोया जाता है और कितनी सिंचित है, कितनी असिंचित है और सिंचित है, तो ट्यूबवैल से या नहर से, ये सब हिसाब लगाया एग्रीकल्चर सेन्सस ने सन् 1970–71 में। उसके देखने के बाद, ये मालूम होता है कि 33 फीसदी आदमी जो किसान कहलाते हैं, उनके पास दो बीघे से कम जमीन है, 33 परसेंट एक तिहाई आदमी और 18 फीसदी के पास दो बीघे से चार बीघे तक जमीन है। 33 और 18 हुए 51। आधे से ज्यादा के पास चार बीघे से कम जमीन होगी और 19 फीसदी के पास 4 बीघे तक। ये हैं, जो किसान कहलाते हैं।

हमने अभी किसानों के लिए थोड़ी–सी सहूलियत दी थी, खासकर उनका टैक्स आधा कर दिया था, और उसके लिए हमने टैक्स लगाया था उन लोगों पर जो ऐश और इशरत का सामान इकट्ठा करते हैं। तो सब अखबारों ने, जो बड़े–बड़े पूंजीपतियों के हैं, हमारे खिलाफ प्रचार ये किया कि हम शहर के गरीब आदमी पर टैक्स लगाकर गांव के मालदार आदमी को फायदा पहुंचाना चाहते हैं। दोस्तों! ये मालदार आदमी जो मैंने आपको बतलाये 33 और 18–19 जो कि खाद इस्तेमाल करते हैं।

अभी 1976 में नेशनल काउंसिल ने बतलाया था इकोनॉमिक रिसर्च, गवर्नमेंट का एक संगठन है, उनकी एक रिपोर्ट तैयार हुई। आप लोगों के यहां लाइब्रेरी में होगी, मंगा लेना।

कोई पढ़ा–लिखा आदमी, चाहे तो मुझसे कह देना, मैं एक कापी उसके पास भेज दूंगा। उसके देखने से यह मालूम होता है कि दिल्ली शहर में अकेले में इतने मालदार आदमी रहते हैं, जितने हिन्दुस्तान के सारे गांवों में नहीं हैं, उससे ज्यादा केवल दिल्ली शहर के अन्दर मालदार आदमी रहता है।

तो गांव के अन्दर भी बेरोजगारी फैलती जा रही है, दिन–ब–दिन फैलती जा रही है। जमीन बढ़ेगी नहीं। इतिहास ने या प्रकृति ने जो हमको दी है, हमारी मातृभूमि को, जमीन वो नहीं बढ़ेगी। हमारी संख्या, जनसंख्या बढ़ेगी, आज तेजी से बढ़ रही है। लेकिन हम कितने उपाय कर रहे हैं, वो बढ़ेगी कम रफ्तार से सही। लेकिन ज्यादातर किसानों की जमीन जो थीं, उसी पर मेंढ़–पर–मेंढ़, मेंढ़–पर–मेंढ़ लगती जाती है, क्या इलाज होगा ?

तीसरी बात –– तीसरी बात, मैंने आपसे यह कही कि गैर–बराबरी, असमानता, गरीब और अमीर की आमदनी में फर्क, जो अंग्रेजों के जमाने में था वो बढ़ता जा रहा है। हम लोग अंग्रेजों के खिलाफ अपने भाषणों में, जो तकरीरों में एक तर्क दिया करते थे, तकरीर देते थे, हम एक बात यह कहा करते थे कि अंग्रेजों के जमाने में सेठ लोग ज्यादा पैदा हो गये हमारे देश में। पहले इतनी गैर–बराबरी नहीं थी। सेठ भी हो तो उसके रहन–सहन में कोई अन्तर नहीं था। सेठ के पास मोटर नहीं थी उस वक्त, लेकिन अब बड़े–बड़े मोटर वाले, बड़े–बड़े सेठ हो गये, बड़े–बड़े शहर हो गये, तो जैसे ही स्वराज मिलेगा, हम गैर बराबरी को दूर करेंगे।

तो दोस्तों, जैसा कि गरीबी की बाबत मैंने आपको बताया था, बरोजगारी की बाबत तो ये बदकिस्मती हमारी समानता की बाबत भी हुई है। गरीब और अमीर की खाई, गांव की और शहर वालों की खाई बजाय कम होने के, पटने के, दूनी हुई है। सन् 50–51 के आंकड़ों के अनुसार, सरकारी आंकड़ों के अनुसार, स्वराज के बीस साल बाद एक किसान की या गांव वाले की आमदनी अगर 100 रू0 है तो गैर–किसान की या शहर के रहने वालों की आमदनी या दूसरा पेशा करने वालों की आमदनी 170 रू0 थी। 100 और 170, एक या पौने दो समझो टोटल और अभी 76–77 में अगर गांव वाले की आमदनी 100 रू0 है, तो शहर वाले की आमदनी 346 रूपए है। साढ़े तीन गुना हो गया वो फर्क, जो कि पहले एक और पौने दो था, अर्थात् गरीब और अमीर की खाई बजाय पटने के दुगनी चौड़ी हो गयी। कैसी नीति ? और पहले थोड़े ही साहूकार और बड़े–बड़े सेठ और पूंजीपति और उद्योगपति थे, आज बहुत बड़े–बड़े साहूकार बहुत बड़े–बड़े साहूकार नहीं कहना चाहिए, उद्योगपति कहना चाहिए, पूंजीपति कहना चाहिए। केवल एक ही मिसाल मैं दूं आपके सामने।

बिड़ला का नाम आपने सबने सुना होगा। बिड़ला के पास सन् 51 में 53 करोड़ की सम्पत्ति थी। टाटा का भी नाम सब ने सुना होगा। उसके पास 116 करोड़ की सम्पति थी। गवर्नमेंट के आंकड़ों के अनुसार और 30 जून सन् 78 को दोनों की सम्पत्ति 1100 करोड़ से ज्यादा हो गयी। बिड़ला की सम्पत्ति उन्नीस गुना बढ़ी और टाटा की नौगुना बढ़ी। तो मैं आपको कह रहा हूं कि देश की बदकिस्मती है कि गरीब–अमीर का फर्क बजाय मिटने के और चौड़ा होता जा रहा है, चौड़ा होता जा रहा है, इसका कौन जिम्मेदार है ?

तो नीतियों की गलती रही। हम उन नीतियों को बदलना चाहते हैं। इसके अलावा चौथी बात जो मैंने थोड़ा–सा इशारा किया था, यहां से वहां तक, कहना भी नहीं चाहता। अगर मुझे समय मिला, बाद में कहूंगा, अपने भाषण के, बेईमानी के बाबत। जिस मुल्क के

प्रशासन में ही ईमानदारी न रही, जिस मुल्क के राजनीतिक नेता ईमानदार न समझे जाते हों, वो मुल्क कभी तरक्की नहीं कर सकता, कभी तरक्की नहीं कर सकता (तालियां)। नीतियां कितनी अच्छी बना दीजिये, बाहर से सौदा कितना ही अच्छा ले लीजिये, टैक्स लगाकर कितना ही रुपया फूंक दीजिये, लेकिन वो रुपया फुंक जाएगा, वो गरीब आदमी तक नहीं पहुंचेगा। वो खेत की पैदावार बढ़ाने में नहीं लगेगा, वो हमारी फैक्ट्रीज की पैदावार बढ़ाने में नहीं लगेगा, बीच में लोग खा जाएंगे। प्रशासन, हमारे बहुत बेईमान हो गए हैं।

लेकिन मैं उनको इतना दोष नहीं देता, जितना राजनीतिक नेताओं को। अगर होम मिनिस्टर ईमानदार हो, चीफ मिनिस्टर ईमानदार हो, तो कोई बड़ा अफसर बेईमान नहीं हो सकता उस सूबे के अन्दर। (तालियां)। और अगर ईमानदार अफसर रहेंगे, ईमानदार सुपरिंटेंडेंट पुलिस होगा, उस जिले के अन्दर बेईमान सब–इंस्पेक्टर का रहना मुश्किल है, नहीं होगा। (तालियां) लेकिन दोस्तों, और हमारे सामाजिक जीवन में जो बेईमानी है, उस सब के लिए जिम्मेदार हैं वो सब लोग, जो कि महाजन कहलाते हैं। संस्कृत का श्लोक है कि आम आदमी, महाजन जिस रास्ते चलते हैं, उस रास्ते चलता है। मान लो अगर मैं गांव का पंच हूं या मान लो सरपंच हूं या सदस्य हूं। अगर मैं गांव की जमीन अपने घर में इकट्ठी करके रख लेता हूं तो उस गांव में ईमानदारी नहीं रहेगी और लड़के भी और, और गांव के रहने वाले वो भी बेईमान हो जाएंगे। जब उनका नम्बर आयेगा, तो वो अपने बेटे को देंगे, बजाय आम आदमी को देने के, तो बेईमानी बढ़ती जा रही है।

ये चार समस्याएं हैं, जो हल करनी है। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूं, मैं कोई नयी बात नहीं कहता, मैं गरीब घर में पैदा हुआ हूं, इसलिए मुझे गरीबी का जात्ती तजुर्बा है। मेरे संस्कार एक गरीबी के हैं, मैं छप्पर के नीचे पैदा हुआ हूं और कच्ची मिट्टी की दीवारें उसके ऊपर छप्पर, एक काश्तकार का लडका। मेरे पिताजी काश्तकार और उनके जो तीन–चार भाई थे, वो भी काश्तकार। तो मेरे संस्कार एक गरीब आदमी के हैं–– इसलिए मैं जानता हूं कि गरीबी के क्या मतलब हैं

मैं तो सन् 57 में इस नतीजे पर पहुंच गया था कि जो रास्ता महात्माजी ने बतलाया, वो ही रास्ता सही है। अपने अध्ययन के जरिये और उत्तर प्रदेश में ( ) 46 से ले के 57 तक मैं कहता हूं कि मेरे विचार बदल गये थे। उसके बाद भी रहा, लेकिन ग्यारह साल के अध्ययन के बाद और प्रशासन के तजुर्बे के बाद, मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि दूसरे देशों की नकल जो हमारे लीडरों ने की है, अपनी अर्थ–व्यवस्था को बनाने में या बिगाड़ने में या बिगाड़ने में, वो रास्ता गलत था। रास्ता वो ही सही था, जो महात्त्मा गांधी ने बतलाया था। (तालयां)। सन् 57 से बराबर मैं कह रहा हूं, यही बात (तालियां)। नई बात नहीं है ये।

मैंने तो जब कांग्रेस के अन्दर रेवेन्यू मिनिस्टर था, सबसे बड़ी उत्तर प्रदेश रियासत का या प्रदेश का, उस वक्त भी आपके पास यहां नागपुर है, जब पंडितजी प्रस्ताव लाये थे कि सब लोग, गांव के गांव मिलकर (सहकारी) खेती करें। मैंने विरोध किया था कि अगर सबसे मिलकर खेती आपने जबर्दस्ती करा दी, तो हिन्दुस्तान बर्बाद हो जाएगा। नाराज हो गये, मुझको इस्तीफा देना पड़ा, (तालियां)। मैंने कहा, मैं अपनी बात से हटने वाला नहीं हूं, मेरा तजुर्बा है कि बाप के मरने के बाद सगे पांच भाई मिलकर खेती नहीं कर सकते हैं, तो सारा गांव मिलकर कैसे खेती करेगा ?

तो शायद कह मैं आपसे यही रहा था कि मेरी राय ये हुई कि महात्मा जो कहता था, वो ही बात सही है। क्या कहता था महात्मा ? सारी उमर उन्होंने वही कहा और उससे हमारी सारी, तीनों आर्थिक समस्या हल हो जाती थीं। जहां तक ईमानदारी की बात है, उसे कहने की जरूरत नहीं थी, उसका अपना चरित्र सब के सामने था। कितने ईमानदार थे वह। महात्माजी का कहना है कि न्यू इंडिया में उनके जो लेख निकलते थे, 'यंग इंडिया' में, ''रीयल इंडिया लिव्ज इन विलेजेस'', असली भारत गांवों में रहता है, नाट इन बाम्बे इन देहली। बम्बई–दिल्ली में नहीं रहता, खेती करता है। ज्यादा खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो। किसान भी मालदार हो जाए और शहर के कारखानों का रोजगार तभी चलेगा, जबकि किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ेगी। मुझ पर बहुत से लोग इल्जाम लगाते हैं, बहुत से लोग कि चरण सिंह केवल किसानों की बात कहता है; नहीं।

मैं किसानों की बात केवल इसलिए कहता हूं कि किसानों की तादाद ज्यादा है। अगर खेती की पैदावार बढ़ जाए तो क्या करेगा किसान उस रुपये का ? जो खेती की पैदावार बेच के लायेगा, परमात्मा करे कि मध्य प्रदेश इतना बड़ा सूबा है आपका, आप अपने सूबे का मुकाबला करो पंजाब के सूबे से। वहां कितनी पैदावार होती है, कितना वहां गौरमेंट ने जोर दिया पैदावार बढ़ाने में। आज हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा फीसदी आमदनी पंजाब के लोगों की है। उसके बाद हरियाणा आता है, और सूबे आते हैं। बिहार सबसे पीछे, उसके बाद गरीबी में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश तीसरे नम्बर पर है। चौथे नम्बर पर उड़ीसा है। तो आप, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, बिहार गरीब सूबों में आते हैं। क्यों? क्योंकि यहां के किसानों की पैदावार कम है, कारण जो भी रहे हों। खेत की पैदावार बढ़ाने की तरफ इतना ध्यान नहीं दिया गया, जितना पंजाब – हरियाणा के लोगों ने दिया। मान लो, आपके खेतों की पैदावार दूनी हो गयी, जब बाजार में बेचोगे, तब हमारे दुकानदारों की तादाद बढ़ जाएगी। फिर वो सामान जो आपके यहां पैदा होगा, तो यहां से ट्रक भर के चलेंगे तो ट्रक चलाने वालों की और बनाने वालों की तादाद बढ़ जाएगी और किसान के हाथ में पैसा आयेगा, वह उस पैसे का क्या करेगा ? वो जरूरत का सामान खरीदेगा, कपडा खरीदेगा, जूता खरीदेगा, लड़के के लिए साइकिल खरीदवायेगा, उनकी किताबें खरीवायेगा और जो भी; घड़ी भी खरीदवा सकता है, अगर उसको जरूरत है। बहू–बेटी के लिए और सामान खरीदेगा। कच्चा मकान है, तो पक्का मकान बनाने के लिए सीमेंट और लोहा खरीदेगा।

जब इन चीजों की मांग होगी सूबे के अन्दर, तब यह मांग उठेगी गांवों से, तो उस मांग को पूरा करने के लिए अर्थात् इस सामान को पैदा करने के लिए उद्योग–धंधे अपने–आप पैदा कर लेंगे लोग, छोटी मशीन से और बड़ी मशीन से। गवर्नमेंट को विकास की जरूरत बहुत कम पड़ेगी, उद्योग–धंधे अपने आप बढ़ जायेंगे, जहां से सामान पैदा होता है ( ) और एक तो मंडी में वो बढ़े कच्चे माल को खरीदने वाले किसान को और दूसरे, उस कच्चे माल या पैदावार के बदले में किसान के पास जो पैसा आया, उसके बदले में साइकिल, घड़ी और कपड़ा बेचने वाले दुकानदारों की तादाद उसके मुकाबले और भी बढ़ जाएगी।

इस तरह मुल्क तरक्की करते हैं। खेती के अलावा तीन पेशे बढ़े हैं –– ट्रेड, ट्रांसपोर्ट, इंडस्ट्री – व्यापार, परिवहन और उद्योग। धन्धे तभी बढ़ते हैं, जबकि पहले किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ती है। इसलिए महात्मा कहता था कि किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाओ। यहां पर दोस्तों, एक बात नयी और बताना चाहता हूं, जो आपको शायद नयी लगे, वैसे शायद

नयी नहीं है। जिस मुल्क के अन्दर किसानों की तादाद ज्यादा होगी, वह मुल्क गरीब होगा। (शोर)

मैं उन शरीफजादों से पूछना चाहता हूं कि मतलब क्या है? मैं ये जानना चाहता हूं कि मतलब क्या है ? (शोर) देखिये, मैं अब आपसे एक बात फिर से कहना चाहता हूं कि सभ्यता का तकाजा यह है कि शांति से बात सुनें। अगर नहीं सुनना चाहते तो आपको जाना चाहिए, वरना इस तरह से डेमोक्रेसी चलने वाली नहीं।

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि जिस मुल्क के अन्दर किसानों की तादाद ज्यादा होती हे, वो मुल्क गरीब होता है। जिस मुल्क के अन्दर गैर–काश्तकारी पेशा करने वालों की तादाद ज्यादा होती है, वो मुल्क मालदार होता है। एक तरफ मैं कह रहा हूं कि खेत की पैदावार बढे। दूसरी तरफ मेरा सुझाव आपसे यह है कि खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटे और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़े । तो, फी–बीघे खेत की पैदावार बढ़ानी है। अच्छा खाद, अच्छा बीज, अच्छा पानी और आपके बेटों को दूसरे पेशों में जाना है, तब जा कर देश मालदार होगा।

दूसरी बात, जो महात्मा कहता था, वो ये थी कि बड़े कारखाने कम लगाओ। उतने लगाओ जितने जरूरी हैं, जिनके बिना देश का काम न चलता हो। हवाई जहाज है, छोटे पैमाने पर नहीं बन सकता, बेशक बड़े कारखाने लगाओ। रेल का इंजन है, बिजली है, लोहा, ये छोटे पैमाने पर हमारा लोहार नहीं बना सकता। बेशक बड़े कारखाने लगाओ। लेकिन अगर जो चीज छोटे पैमाने पर बन सकती है, उसे छोटे ही पैमाने पर बनाओ। (शोर)

दोस्तों, अगर आप लोगों ने अपने लीडरों से यह सीखा है कि दूसरे की सभा न होने दो। इसका आपको फायदा होने वाला नहीं है। जनता मूर्ख नहीं है, वो सब समझती है कि ये क्या हो रहा है। (तालियां) आपको शरम आनी चाहिए, अगर कोई इन्सान हैं आप तो!

तो, मैं आपसे यह कह रहा था कि खेत की पैदावार फी बीघे बढ़ानी है लेकिन खेत पर काम करने वाले, काम करने वालों की तादाद को घटाना है। दूसरे पेशों में उनको जाना है। अब आपको ये बताना चाहता हूं कि अमरीका सबसे मालदार देश है –– चार आदमी खेती करते हैं, 96 आदमी दूसरा पेशा करते है। उस वक्त हमारे मुल्क में जब अंग्रेज आये थे, 100 में 60 आदमी खेती करते थे, आज 72 आदमी खेती करते हैं। तो उस वक्त हमारा मुल्क आज के मुकाबले में ज्यादा मालदार था और आज गरीब हो गया, क्योंकि खेती करने वालों की तादाद यहां बजाय घटने के, जैसे दूसरे प्रगतिशील या मालदार देशों में घटी है, बढ़ती चली गयी, बढ़ती चली गयी। और गरीबी भी बढ़ती चली गयी। 100 में 32 आदमी उस वक्त दूसरा पेशा करते थे।

ये जो बड़े–बड़े कारखाने लगे हुए हैं, बड़ी तादाद के बावजूद 68 लाख आदमी इन कारखानों में लगा हुआ है। केवल 22 करोड़ आदमी हमारे यहां 15 या 16 साल से बड़ी उमर के ( ) के डेढ़ करोड आबादी हमारी हर साल बढ़ती है। 50 लाख लड़कों की तादाद ऐसी है, जो वर्किंग फोर्स है, काम करने की क्षमता रखने वाले आदमी हैं, उनकी तादाद हर साल बढ़ जाती है। जब आज 95 हजार कारखानों में 68 लाख आदमी लगे हुए हैं, तो हर साल जो 50 लाख हमारे नौजवान बढ़ेंगे, उनको बड़े कारखानों में रोजगार नहीं मिलेगा। इसलिए गांधी चरखा लेकर बैठा था। बड़े घर में पैदा हुआ, राजा के दीवान के घर, बैरिस्टरी करते थे और चरखा लेकर बैठ गया, हमको सिखाने के लिए कि यूरोप की और अमरीका की नकल मत

करना, वहां जमीन ज्यादा है, लोहा ज्यादा है, कोयला ज्यादा है, खेत ज्यादा है, वहां बड़े कारखाने चलेंगे। वहां आदमियों की तादाद कम है, वहां मशीन की मदद की जरूरत पड़ेगी, वहां बड़े फार्म होंगे। लेकिन हमारे यहां जनसंख्या बहुत ज्यादा है, जमीन कम है, तो हमारे छोटे–छोटे फार्म होने चाहिए और छोटे–छोटे रोजगार होने चाहिए, उद्योग–धंधे होने चाहिए, दस्तकारी होनी चाहिए।

तो, हम ये कहते कि बड़े कारखाने जो लगते हैं, उससे पूंजीपति पैदा होता है, बेरोजगारी पैदा होती है। (शोर)

अब मैं आपके लीडरों से जाकर ये कहने वाला हूं कि आप सब लोगों ने रतलाम की सभा में विघ्न किया। अगर आप ये करते हैं, तो ये बात हिन्दुस्तान में छुपी नहीं रहेगी और फिर आपकी मीटिंग हो नहीं सकेगी, ये मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूं, ये बतलाना चाहता हूं। अगर थोड़ी ईमानदारी और शर्म रह गयी है, तो ईमानदारी से मेरी बात सुनो या मैं सभा छोड़ के चला जाऊंगा। पढ़े–लिखे लोग हैं, शहर में रहने वाले लोग हैं, बाकायदा डिसाइड करकके आये हैं कि मीटिंग नहीं होने देंगे लोकदल की। मैं अपना अख्तियार इस्तेमाल नहीं करना चाहता हूं। कानून में ये अख्तियार है कि दूसरे कीसभा में जो विघ्न डालेगा, वो जेल भेजा जा सकता है, वो चाहे कोई हो। (शोर)

तो मैं आपसे क्या कह रहा था? बातचीत में मेरी बात की कड़ी टूट जाती है। वो ये कि छोटे–छोटे रोजगार देश में हों, तब जाके इन लड़कों को रोजगार मिले। चाहे पढ़े–लिखे हों, चाहे बेपढ़े हों, चाहे गांव में रहते हों, चाहे शहर में रहते हों। बड़े कारखानों में रोजगार नहीं मिल सकता। वो मैंने आपको समझाने की कोशिश की।

तो ये दो नीतियां हमारी, अगर हमारे हाथ में अख्तियार आता है, तो हम बड़े–बड़े कारखाने जो ऐसा सामान पैदा कर रहे हैं, जो हाथ से बन सकता है, मसलन कपड़े बनाने का कारखाना, क्या जरूरत है? चरखे–करघे से हमारा इतना अच्छा कपड़ा बनता था कि अंग्रेज जब आये, अंग्रेजों के मुल्कों में जाता था। अंग्रेज ने उन पर टैक्स लगा दिया 80 फीसदी, तब भी बिका। 1817 में उन्होंने कानून बना दिया अपनी लोकसभा में कि हिन्दुस्तान में हाथ से बने कपड़ों को जो अंग्रेज पहनेगा, तीन महीने की सजा होगी।

इस तरीके से दोस्तों, हमारी दस्तकारियां खत्म हुईं। हाथ का बना हुआ सामान घरों में बनता है बजाय मशीन के लेकिन मशीन नहीं लगनी चाहिए कि हाथ कमायें आमदनी ज्यादा हो व छोटे रोजगार लगे; तो वो अंग्रेजों ने खत्म किये। अब आजाद होने के बाद हमारी वही पुरानी नीति अंग्रेजों के जमाने की चल रही है। उस सामान को पैदा करने के लिए, जो दस्तकारी से, हस्तकला से, छोटे पैमाने, छोटी मशीन से बन सकता है, उसके बनाने के लिए बड़े–बड़े कारखाने लगा रहे हैं, कई–कई सौ करोड़ के। 300 करोड़ का कारखाना एक गुजरात में बन रहा है, कितने आदमियों को रोजगार मिलेगा ? 500 आदमियों को, क्यों ? 300 करोड़, ज्यादा से ज्यादा रोजगार 500 आदिमयों को मिलेगा। तो हम छोटी–छोटी इकाई चाहते हैं। (शोर)

तो दोस्तों, मैं आपसे यह कहना चाहता था कि हमारा इरादा यह है कि बड़े कारखानों के मालिकों को हमारा हुकुम यह कि जो सामान छोटे पैमाने पर कस्बों और गांवों में बनता रहा है, हाथ के जरिये अब तक, अगर आप वो सामान बनाते हैं तो कारखाने को बेशक चलाओ, लेकिन हिन्दुस्तान के बाहर तुम्हारा सामान बिकेगा और हिन्दुस्तान के अन्दर तुम्हारा

सामान नहीं बिकने दिया जाएगा, ताकि लोगों को रोजगार मिले, (तालियां), यह हमारा इरादा है।

तो, अब रही ईमानदारी की बात, वो तो मैं आपसे कह ही चुका हूं। ईमानदार नेताओं की जरूरत होती है और बिना ईमानदार नेताओं के ईमानदार शासक नहीं होंगे। आज हमारे यहां ——

मैं जनसंघ के दोस्तों, आपको बताये देता हूं और आज ऐलान किये देता हूं कि लोकदल के शासन —— लोगों से ये बात छिपी नहीं है। आज यू0पी0 के अन्दर एक भी सभा तुम कर नहीं सकोगे, बतलाये देता हूं, हरियाणा में नही कर सकोगे, बिहार में नहीं कर सकोगे, क्या मायने हुए इस बात के ? जान–बूझकर शोर मचाना, क्या मतलब है? कोई लज्जा, कोई शराफत। लेकिन नहीं, वो एक संगठित तरीके से आये हैं, सभा को बिगाड़ने के लिए।

तो दोस्तों, मैं यह कह रहा था। आज हमारे यहां ( ) का, वकालतखाने में या चेम्बर आफ कामर्स में यही होता है कि फलां आदमी बड़ा ईमानदार है, फलां अफसर ईमानदार है, फलां चेयरमैन ईमानदार है, क्यों ? इसलिए कि बाकी ज्यादातर लोग ईमानदार नहीं है। जिस चीज का अभाव है, उसी का जिक्र होता है। ईमानदारी का अभाव है, इसलिए उंगली दिखाते हैं ईमानदार की तरफ कि फला आदमी ईमानदार है। जनसभा में बैठकर उंगली उठायी जाती है ईमानदार आदमियों पे। वो देश खुशकिस्मत है, जहां बेईमान आदमियों का जिकर होता है, इसका मतलब है, वहां सब ईमानदार हैं। लेकिन फला आदमी बेईमान है। ये तभी होगा जब ईमानदार लोगों को चुनें।

अब ये दोस्त, ये नौजवान इसलिए आये, इनको ये मालूम होना चाहिए जो इनके हाथ में आज मध्य प्रदेश की हुकूमत है, तो मैं नयी पार्टी एक ईमानदारी से बनाना चाहता था। मेरे सामने जनता, कांग्रेस और सोशलिस्ट और भारतीय लोकदल का कोई सवाल नहीं था। जो उसके लीडर को हमने कनवीनर बनाया था, उसको हमने टिकट दे दिया, चुनकर आ गये। शासन आपके हाथ में है, मैं दूसरों को टिकट देता, तो एक दिखलायी नहीं देता, बतलाये देता हूं, (तालियां)। इंदिरा अकेली डिक्टेटर है, आपका ऑर्गेनाइजेशन डिक्टेटरशिप देश के अन्दर लाना चाहता है। वो अकेली है, आज नहीं कल, कल नहीं परसों चली जाएगी। लेकिन आप संगठन पैदा कर रहे हो। इसमें हिन्दू और मुसलमान का देश बना रहे हो। मगर आप हिन्दू राष्ट्रवाद करना चाहते हो, हिन्दू राष्ट्र कायम करना चाहते हो, आपके दिल के अन्दर ये बात छिपी हुई है। (तालियां) तो, यह नहीं होने पायेगा, हरगिज नहीं होने पायेगा। हम सारे हिन्दुस्तानियों को एक समान समझते हैं, चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो; और हिन्दुओं के अन्दर चाहे वो किसी बिरादरी का हो, उसका बराबर का हक है, छोटी–से–छोटी बिरादरी के सदस्य का भी, यह हमारा धर्म है। आप ताज्जुब करेंगे, मैंने जाना है कि आप हिन्दुओं की छोटी बिरादरी के खिलाफ हैं, मुसलमानों के खिलाफ तो थे ही छोटा गरीब हिन्दू अगर हरिजन है, तो उससे भी आज बराबरी का वर्ताव नहीं करना चाहते। इन्हीं शब्दों के साथ दोस्तों, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है, जो मैं रतलाम में देख रहा हूं और जब आपके चीफ मिनिस्टरजी से पूछूंगा तो वो इंकार करेंगे कि नहीं, ऐसा नहीं हुआ। ये भी बतलाये देता हूं। वो यही कहेगा कि नहीं, ऐसा हुआ ही नहीं, क्योंकि सच्चाई और गैर –सच्चाई का उसको फर्क मालूम नहीं है, नहीं है दोस्तों, (तालियां)।

हां, पानी की जो बात ,आज सूखा पड़ा हुआ है उत्तर प्रदेश में (तालियां), राजस्थान में, मध्य प्रदेश में और उड़ीसा के बहुत से हिस्से में। अब दो सवाल हैं –– अन्न का और पानी का। हमने आपके चीफ मिनिस्टर से कहा हुआ है, आपकी गवर्नमेंट से कहा हुआ है और अभी चीफ सैक्रेटरी को बुलाया था, नौ सूबों में सूखा है। उनको हमने 9 तारीख को दिल्ली में बुलाया था। उनसे उस वक्त कह दिया, लिख के दे दिया कि फूड फार वर्क योजना शुरू करवाओ, जो लोगों को अन्न की जरूरत है, बजाय पैसे देने के उनको अन्न दो और जितने अन्न की जरूरत होगी, हम आपको देंगे। (तालियां)

लेकिन हमारे खिलाफ प्रचार यह होता है जनसंघ के लीडरों और मिनिस्टरों की तरफ से कि हम तो मदद करना चाहते हैं गरीबों की, लेकिन क्या करें केन्द्र की, दिल्ली की सरकार हमारी नहीं है, लोकदल की है, इसलिए नहीं देते। ये झूठ और बेईमानी का प्रचार फैला रहे हैं। रतलाम के दोस्तों, मैं भरी सभा में कहता हूं कि हमने अन्न के लिए कभी मना नहीं किया। अब मैं ऐलान किये देता हूं कि 'फूड फार वर्क प्रोग्राम' के लिए जितने अन्न की जरूरत होगी, क्योंकि हमारा भंडार भरा हुआ है अन्न से, हम उतना स्टॉक आपको देंगे और हमारे खिलाफ जो प्रचार किया है झूठ और बेईमानी का, वो खत्म हो जायेगा। (तालियां)

पानी की समस्या जरूर है। पानी इकट्ठा नहीं किया जा सकता और बरसात जो इतनी कम हुई है कि बहुत–सी नदियों का पानी भी कम हो गया। उसके लिए रिग्स चाहिए, मशीन चाहिए, खास तौर से पथरीली भूमि में कुँआ खोदने के लिए, तो वो हमारे यहां आज 'इंडिया नेशनल गैस औरगेनाइजेशन' है, उसके पास कुछ नहीं है। उनसे हमने मालूम किया और उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश को, राजस्थान को और उत्तर प्रदेश को भेज दिया। उनका कहना यह है कि ये जो रिग मशीन है, हमारे पास, ये पथरीली जमीन में काम करने वाली नहीं। तो, फौज के लोगों से भी हमने कहा, मिनिस्टरी, इंजीनियर निर्दोष हैं। लेकिन उन्होंने एक एतराज किया, जो एतराज उनका सही है, जिससे हम उनसे नहीं लेना चाहते और उनके पास इतनी हैं भी नहीं। हमने दूसरे देशों से भी कहा है और हमारे राजदूत जो दूसरे देशों में हैं, उनसे भी कहा कि जहां जितनी रिग मशीन हैं, ले लो। दस हजार हों, उन सब को खरीद लो। रूपये की परवाह न करो (तालियां)। जानता हूं कि कितनी हमारी कोशिश हो, लेकिन रिग ऐसी नहीं है कि महीने में बन जाए, दो महीने में बन जाए, 6 महीने से 9 महीने तक लग जाएं। लिहाजा दोस्तों, पानी का तनाव जरूर एक संकट पैदा करने वाला है और हमारी परेशानी है कि हम उसका क्या इलाज करें, लेकिन जितना हो सकता है, हम चाहते हैं कि वो हम करें।

मुझे सबसे ज्यादा चिंता इस बात की है कि अगर नवम्बर के आखिर तक या दिसम्बर के आखिर तक वर्षा न हुई, तो फिर इसका मतलब यह हुआ कि रबी की फसल भी खराब हो जाएगी। होना यह चाहिए था कि अंग्रेज के जमाने में साढ़े सत्रह फीसदी रकबे पर आबपाशी थी, साढ़े सत्रह फीसदी, अब 25 है। अमरीका से अन्न मंगाते हैं हम खरबों रूपये का, बजाय अपने खेतों की पैदावार बढ़ाने के लिए सिंचाई का प्रबंध कर दें। अब तक स्थिति हमारी यह रही कि जो पहले सरकार में रह चुके हैं कि यहां बड़े–बड़े कारखाने लगाओ, अन्न दूसरे देश से मंगाओ।

हमारा यह विश्वास है कि हम अपने देशवासियों को पहले अन्न का अधिकार देना चाहते हैं, यही नहीं, हम अपने देश के अन्दर इतना अन्न पैदा करना चाहते हैं कि दूसरे देशों

को बेचें, क्योंकि हमारी जमीन अच्छी है, हमारे यहां सूरज की किरणें खूब पड़ती हैं, जिनसे कि फसल पकती है। हमारे यहां पानी भी बरसात का खूब होता है, जिसको कि जमा करके नहरें निकाल सकते हैं। तो दूसरे देशों की बजाय कारखाने का सामान भेजने के खेत की पैदावार भेजने का हमारा मंशा है, क्योंकि जैसा मैंने कहा, दूसरे देशों में अन्न की कमी पड़ेगी और दूसरे देश हमारे जैसे देशों से अन्न मंगायें। लेकिन इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत है आबपासी की। आबपाशी केवल। 25 फीसदी कम से कम आबपाशी होनी चाहिए। पंजाब में 80 फीसदी रकबे में है आबपाशी, इतना उन लोगों ने ध्यान दिया। सूखा उतना ही है, जितना आपके यहां, लेकिन उनके लोगों को उतना कष्ट नहीं।

तो हम यह चाहते हैं कि हमारे आधे से ज्यादा रकबे में एक बारआबपाशी का इंतजाम हो जाता। लेकिन उसमें समय लगेगा (तालियां)। हमारे गांवों की उपेक्षा होती रही। सब कुछ बड़े–बड़े शहर, दिल्ली, और बम्बई में खर्च होता रहा, क्यों ? हमारे नेता ईमानदारी से चाहते थे कि हमारा देश उठे। उन्होंने कुर्बानी दी। उनकी नीयत खराब नहीं थी। लेकिन गांव का उनको जाती तजुर्बा नहीं था। गांव की समस्याओं को नहीं समझते थे, केवल कारखाने की समस्या समझते थे, इसलिए शहर के शहर पहले तरक्की करते चले गये और गांव पहले के मुकाबले और पिछड़ते चले गये, पिछड़ते चले गये। तो हम चाहते हैं गांव को उठाना।

फिर मैं कहता हूं कि असली भारत गांव में रहता है, बम्बई और रतलाम में नहीं रहता है। लोग ये कहते हैं कि मैं, चरण सिंह केवल किसानों की बात करता है, नहीं, जब मैं किसानों की बात करता हूं तो उस वक्त गैर–किसानों के लाभ की बात भी मेरी नजर में है, क्योंकि किसान खुशहाल होगा, तभी गैर–किसान खुशहाल होगा। ये हो नहीं सकता कि किसान बर्बाद हो जाए और एक दुकानदार मालदार हो जाए। हो नहीं सकता। (तालियां) तो किसानों की खुशहाली में छिपी हुई है शहर वालों की खुशहाली, इसलिए किसानों को मैं प्रायोरिटी देता हूं, पहला नम्बर देता हूं, जब खेत की पैदावार बढ़ेगी, तभी देश की खुशहाली बढ़ेगी।

इन शब्दों के साथ, बावजूद इसके कि मुझको इस बात का मानसिक कष्ट है कि कुछ लोगों ने जानबूझकर विघ्न डालने की कोशिश की, लेकिन आप लोगों ने शांति से मेरी बात सुनी, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं और मैं चाहता हूं कि मेरे साथ आप तीन नारे लगायें और मुझे जाने की इजाजत दीजिये ––

भारत माता की जय।
भारत माता की जय।।
महात्मा गांधी की जय।
महात्मा गांधी की जय।।
लोकदल की जय।
लोकदल की जय।।